# भगवत् कृपा

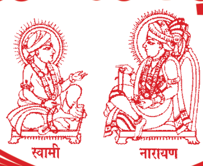


साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 32 अंक : 2 | 5.3.2009 गुरुवार (मार्च –अप्रैल) | शुल्क – प्रति अंक : 20.00, वार्षिक : 100.00


## निमंत्रण

प.पू. गुरुजी की हर एक बात, क्रिया, चरित्र को गहराई से निहारेंगे,
तो उसमें
गुरुहरि काकाजी के प्रति की गुरुभक्ति व उन्हें 'जीवंत' रखने की ही एक तमन्ना दिखाई देगी।
सो, प.पू. गुरुजी तो गुणातीत समाज के लिए वो चुंबकीय सुई हैं,
जिनकी निगाह कैसे भी संजोगों में प.पू. काकाजीरूपी उत्तरी ध्रुव पर ही आकर टिकती है
और...
हमें इस दिशा में – प.पू. काकाजी के सिद्धांतों पर अग्रसर होने न केवल प्रेरणा देते हैं;
बल्कि, इस मार्ग पर चलाने आज वे हमारे वाहक बने हैं।
**तो, सपरिवार–मित्रमंडल सहित 'योगी परिवार आनंदोत्सव' में आओ,**
*29 मार्च '09*, रविवार सायं *5:00* बजे से 'गुणातीत समाज' के हम सभी एकत्रित होकर
प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेबजी,
प.पू. हरिभाई साहेब और प.पू. निर्मलस्वामिजी
एवं
प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई जैसी 'योगी परिवार' की नींव की विभूतियों की निश्रा में
**हमारे प्यारे-प्यारे गुरुजी का 72 वाँ प्राकट्य दिन मनाएं** और प्रार्थना करें कि
हम भी प.पू. गुरुजी के संबंध से ऐसी चुंबकीय सुई बन जाएं!

*इन्दु मल्कानी*
*(गुणातीत कुनबा, दिल्ली)*

# उत्तर भारत के मुक्तों के चैतन्यप्रहरी के प्राकट्य पर्व पर...

...(૧૯૬૭-૬૮માં વિદ્યાનગર) રામકૃષ્ણ મિશન હૉલમાં પોષીપૂનમની શિબિર ઊજવી અને ત્યાર પછી **કાકા** યાં શિબિર વખતે જ બોઈલા'તા કે–

*'મારે હવે મુકુંદજીવનસ્વામીને એક સંતની જોડ ગોઠવી અને દિલ્હી લઈ જવા છે.'*

...આ મને યાદ છે. હવે ઇ તો પછી સંજોગવશાત ભૂલાઈ ગ્યું હોય, જૂનું થઈ ગ્યું હોય, પણ–

***આ દરવાજામાં જ્યારે આઈવો ને... મને શાંતિ થઈ ગઈ, જે ગોંડળમાં બાપાના વખતે શાંતિ થાતી'તી એવી!...***

બધાંયની હાજરીમાં હું ખોટું બોલું ઈ ઠીક નહીં અને આમાં ખોટું છે ય નહીં...

આજે આ દરવાજામાં અંદર આવ્યા પછી મને ઉત્તરોત્તર એટલો આનંદ આવે છે; આ મંદિર જોયું, સમાજ જોયો, કાકા-પપ્પાની મૂર્તિ જોઈ અને તમારું આ જે સર્જન સે, એ સર્જન મેં જોયું. બધો ચારે પાંખનો સમાજ અહીંયા અત્યારે ઉપસ્થિત છે. કાકાને કરાવવું'તું, આપણાં ભેજામાં ઊતરતું ન્હોતું. પછી માણાવદર અમારી પાછળે ય એવા જ પઈડા'તા. સમાજ ઊભો કઈરો એણે... પણ, **આ જોયું એટલે મને બધું નાનું લાગે છે.**

તમારા ઉપર કાકાની ખરેખર કૃપા થઈ! ખરેખર કૃપા થઈ!

*— પ.ભ. ભગવાનજીભાઈ પુરાણી (માણાવદર)*

*[૩૧ માર્ચ '૦૮-સાંજે]*

...(१९६७-६८ में विद्यानगर) रामकृष्ण मिशन के हॉल में पोषीपूनम की शिविर मनाई और बाद में **काकाजी** वहाँ शिविर में ही बोले थे कि–

*'मुझे अब मुकुंदजीवनस्वामी को एक संत की जोड़ की व्यवस्था करके दिल्ली ले जाना है।'*

... यह मुझे याद है। अब वो बात तो बाद में संजोगवश भूल से गए होंगे, मानो पुरानी हो गई, पर–

***इस दरवाजे के अंदर जब आया और... मुझे शांति हो गई; जो गोंडल में बापा के समय में शांति होती थी–वैसी!...***

सभी की हाज़िरी में झूठ बोलना वो ठीक नहीं और इसमें झूठ है भी नहीं...

आज इस दरवाजे में–अंदर आने के बाद मुझे उत्तरोत्तर इतना आनंद आ रहा है; यह मंदिर देखा, समाज देखा, काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति देखी और तुम्हारा यह जो सर्जन है, वो सर्जन मैंने देखा। सारा, चारों पंखुड़ियों का समाज अभी यहाँ उपस्थित है। काकाजी को कराना था, पर हमारे भेजे में उतरता नहीं था। फिर माणावदर भी वे हमारे पीछे ऐसे ही पड़े थे। समाज खड़ा किया उन्होंने... पर, **यह देखने पर मुझे (और) सब छोटा लगता है।**

आपके ऊपर काकाजी की सचमुच कृपा हुई! सचमुच कृपा हुई!

*— प.भ. भगवानजीभाई पुराणी (माणावदर)*

*[३१ मार्च '०८ – सायं]*

पिछले ही वर्ष प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्योत्सव का लाभ लेने आए **माणावदर** के हमारे पुराने जोगी **प.भ. भगवानजीभाई पुराणी** के ये उद्‌गार मानो हम दिल्लीवासिओं को झंझोड़ देते हैं कि ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज व काकाजी महाराज ने प.पू. गुरुजी के रूप में हमें कैसी अनमोल बख़्शिश दी है। सो, अब इस दिव्य विभूति को तत्त्व से पहचानने में गफ़लत न करें!

गुणातीत कुनबे से मिले हमारे प.पू. गुरुजी ने सभी मुक्तों के समक्ष अपने जीवन का एक-एक पन्ना खुला कर दिया है। हूबहू ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की भांति मुक्तों के साथ वे ऐसे रसबस हुए हैं कि उनके साथ बैठते-उठते मुक्त को एहसास ही नहीं होने देते कि वे इतने महान हैं... उनकी ऐसी महानता का निम्न प्रसंग साधकों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैः

पूर्वाश्रम में प.पू. गुरुजी घर के ज्येष्ठ पुत्र थे। जब प.पू. गुरुजी ने त्यागाश्रम में प्रवेश लिया, तब उनके घर की आर्थिक हालत खूब यानि खूब पतली थी। प.पू. गुरुजी पढ़-लिख कर ऐसे तैयार हुए थे कि परिवार में उस समय वे सहायरूप हो सकें। लेकिन, प.पू. गुरुजी को गुरुवर्य योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी और प.पू. बा से जो लगाव था–उस लगाव के वश वे साधु हो गए। पार्षदी दीक्षा लेने के बाद प.पू. गुरुजी अन्य पार्षदों के साथ मुंबई में कांदिवली– प.भ. माणेकलाल सेठ की कोठी 'सूर्यकुंज' में रहते थे। एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज कुछ दिनों के लिए वहाँ आए थे। सो, प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम के पिताश्री प.भ. धनप्रसादभाई भी प.पू. बापा के दर्शन करने वहाँ आए होंगे और जाते–जाते प.पू. गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' करने आए। पर, प.पू. गुरुजी ने देखा कि उनकी आँखें गीली थीं।

यह देख कर प.पू. गुरुजी घर के हालात भाँप गए और उनका मन व्याकुल हो गया। इसी दौरान त्यागाश्रम को अपनाए प.पू. गुरुजी के मन में भी लगातार द्वंद्व चलता रहता था–

*'मुझ में हठ, मान और ईर्ष्या इत्यादि कितना कुछ भरा हुआ है और मेरी चंचल व तेज प्रकृति के कारण लगता है कि इस रास्ते के लिए मैं लायक नहीं। कहीं ये न हो कि इस रास्ते पर चल नहीं पाऊँ। इससे तो अच्छा है कि मैं घर वापिस चला जाऊँ; कम से कम घर वालों को तो सहायरूप रहूँगा।'*

पर, प.पू. गुरुजी ने सोचा–

*मैं भाग कर नहीं जाऊँगा, बल्कि प.पू. बापा को सारी बात करूँगा और मेरी बात सुन कर, सोच-समझ कर वे मुझे इज़ाजत दे ही देंगे।*

और... प.पू. गुरुजी ने सारी बात प.पू. बापा को करी। उन्होंने सारी बात खूब ध्यान से ऐसी सुनी कि उनके हावभाव से प.पू. गुरुजी को भी लगा कि मेरी बात को इन्होंने समझ लिया है और वे मुझे अब जाने देंगे। लेकिन, प.पू. बापा तो बोले–

*'सुनो, मैंने तुम्हें गोंडल में शास्त्रीजी महाराज की साक्षी में दीक्षा दी है। वे तो कितने समर्थ? इन्हें पता होगा ही न कि मुकुंद लायक है और जैसे वे तुम्हारा ख्याल रखेंगे, वैसे तुम्हारे माँ-बाप–जिन्होंने तुम्हें दिया है, उनका भी ख्याल रखेंगे ही। वो उनकी जिम्मेदारी है। जाओ, दोबारा ऐसा छिछोरा विचार नहीं करना।'*

यह कहते हुए उन्होंने प.पू. गुरुजी की पीठ पर धब्बा मारा। प.पू. गुरुजी बताते हैं कि–

*बाद में फिर कभी ऐसा कोई विचार मेरे मन में नहीं आया।*

यह प्रसंग दर्शाता है कि ***प.पू. गुरुजी के भीतर*** के किसी एक कोने में तब भी यानि– ***मन की ऐसी डाँवाडोल हालत में भी प.पू. बापा के प्रति 'प्रभु' का भाव-दिव्यभाव टिमटिमा रहा होगा।*** तभी उस दिन के बाद प.पू. गुरुजी को भीतर में खूब शांति हो गई! और... उनके ***इस भाव ने ही आज उन्हें हमारे लिए एक आदर्श – हमारी प्रेरणामूर्ति बना दिया!!***

सच, ऐसे गुरु कहाँ मिलेंगे कि जो खुले मन से अपनी साधना में आए विघ्नों को बताने में कभी हिचकते

नहीं और ***साधकों को प्रेरणा देते हैं कि ऐसी बाधाओं से कभी घबराना नहीं, उनसे समझौता करना नहीं।***

१९७१ में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज स्वधाम गए, तब प.पू. गुरुजी खूब व्याकुल हो गए। हाँलाकि संस्था से अलग होने के पश्चात् प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी की सेरेछाया तो थी ही, तब भी अंदर से प.पू. गुरुजी मानो टूट गए थे। प.पू. बापा उनसे जो मिलते थे, उनकी बातें सुनते थे–ऐसे प्रसंग याद करते हुए भीतर में एक खालीपन रहा करता था। पर, यह बात उन्होंने किसी को करी नहीं थी। फिर जब प.पू. काकाजी पहली बार सांकरदा पधारे और उनकी शैली के मुताबिक श्री ठाकुरजी को दंडवत् कर रहे थे; वहाँ संतों के बीच प.पू. गुरुजी भी खड़े-खड़े दर्शन कर रहे थे कि दंडवत् करते-करते प.पू. गुरुजी की ओर दृष्टि करते हुए प.पू. काकाजी मानो अंतर्यामी रूप से एकदम बोले–

***'मुकुंद, बापा से अधिक सुख शायद नहीं दे पाऊँ, लेकिन बापा जितना तो दूँगा ही–चिंता नहीं करना। तेरी जिम्मेदारी मेरी है।'***

प.पू. गुरुजी कहते हैं कि–

***बस, उनके इस वाक्य से मन का सूनापन चला गया और दिल में ठंडक हो गई!***

यूं, **साधना मार्ग पर चलने वाले हर एक साधक के लिए उनके प्रसंग बताते हैं कि अपने गुरु–अपनी आदर्श विभूतियों के वचन में विश्वास रखेंगे, तो हम संभल जाएंगे।** आज भी प्रत्येक क्षण प.पू. काकाजी के वचन में विश्वास रखते हुए प.पू. गुरुजी अपनी भक्ति अदा कर रहे हैं...

थोड़े समय पहले ही प.पू. गुरुजी ने बताया था कि–वर्षों पहले प.भ. नवीनभाई की सबसे छोटी बेटी एक्सीडॅन्ट में अक्षरनिवासी हो गई थी। तब किसी बात पर प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को कहा था–

***'नगीन के यहाँ (प.पू. काकाजी प.भ. नवीनभाई को 'नगीन' ही कहा करते थे।) अब जो (लड़का / लड़की) आएगा, उसके यहाँ एक बहुत बड़ा मुक्त भेजना है...'***

गहराई से सोचें तो एकदम बुद्धि से परे की यह बात थी कि जब प.भ. नवीनभाई के बेटे का ही कोई अस्तित्व नहीं था, तो उसके बेटे की तो बात ही कहाँ से? परंतु, प.पू. गुरुजी को तो आर्षदृष्टा प.पू. काकाजी की हर एक बात पर अटूट भरोसा। सो, हम देखते हैं कि प.पू. काकाजी के इस वचन को याद रखते हुए प.पू. गुरुजी को आज **'नक्षत्र'** (उसे लाड़ से सब **'नक्षु'** कहते हैं) के प्रति कुछ विशेष ही लगाव है। फिर भी, हमारे संदेहयुक्त दिमाग में यह बात शायद फिट नहीं बैठती होगी, इसलिए प.पू. काकाजी ने ही एक अनजान व्यक्ति से मानो हमें प्रतीति करवाई कि नक्षत्र के बारे प.पू. गुरुजी द्वारा कही इस बात को हम दिल की सच्चाई से मानें।

पिछले साल सितंबर में करीब २५ मुक्तों को लेकर प.पू. गुरुजी एक शाम प.भ. पुनीतजी के घर पानीपत गए थे। वहाँ थोड़ा अल्पाहार करके रात को ९:०० बजे के करीब तो दिल्ली लौटने निकल गए। रास्ते में **मुरथल** के **प.भ. श्यामसुंदरजी** के आग्रहवश उनके ढाबे पर प.पू. गुरुजी व सभी गए। प.पू. गुरुजी व सभी, ढाबे के बाहर बने शॅड में बैठे थे और प.पू. गुरुजी के आस-पास प.भ. नवीनभाई का पोता 'नक्षु' खेल रहा था। ढाबे के अंदर अन्य ग्राहक भोजन ले रहे थे। अचानक वहाँ से एक भाई साहब उठ कर बाहर शॅड में आए और नक्षु को देख कर बोले–

*'मैं अपने बच्चों को बोल कर आया हूँ कि इस बच्चे का दर्शन करके आता हूँ। इस बच्चे को देख कर मुझे करंट-सा लगा। वैसे मैं माता (देवी) का भक्त हूँ। इतना कहूँगा कि समय बताएगा कि यह बच्चा बड़ा होकर क्या बनेगा? यह ऐसा बनेगा कि सब इस पर गर्व करेंगे; पर, यदि ये ऐसे ही संतों के साथ रहेगा तो ही। सो, इसके माँ-बाप की खूब जिम्मेदारी है।'*

प.पू. गुरुजी भी नक्षु के बारे ऐसी बातें करीब डेढ़ साल से अकसर कहा करते थे... पर, नक्षु को यूं बेपनाह लाड़ करते देख कर, ईर्ष्या की हमारी वृत्ति के कारण, हमें उनके प्रति मनुष्यभाव तो नहीं, पर मायिकभाव आ ही जाता है।▲ सो, प.पू. काकाजी ने मानो इस व्यक्ति में प्रवेश करके बोला कि नक्षत्र के बारे कही प.पू. गुरुजी की बातों को हम सच मानें।

स्वरूपों के प्रति प.पू. गुरुजी को जैसे विश्वास अटूट है, वैसे ही उनके प्रति सेवकभाव भी गजब का है और उनके ऐसे 'जेस्चर्स' सेवकों को भक्ति अदा करने की एक सूझ भी दे जाते हैं।

वर्षों पहले **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** दिल्ली में पू. मल्कानी अंकल के फार्म पर आए थे। तब रात को प.पू. स्वामिजी को पेट में अचानक कुछ तकलीफ हुई और संतों ने फार्म हाऊस पर 'खसखस' भिजवाने के लिए रात को करीब ११:०० बजे मंदिर में फोन किया। स्वाभाविक है कि प.पू. गुरुजी किसी सेवक के हाथों भी भिजवा सकते थे और संतों एवं प.पू. स्वामिजी भी समझते कि इतनी रात को प.पू. गुरुजी का आना लाजमी नहीं है। पर, प.पू. गुरुजी तो प.पू. स्वामिजी की तबियत की चिंता करते हुए एक सेवक की अदा से स्वयं खसखस लेकर फार्म पर चले गए!

यूं, उनका ऐसा हर चरित्र हमें सिखा जाता है कि– **भले ही प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी से अतिशय प्रीति है और उन्हें ही फॉलो किया, पर दूसरी ओर प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसी विभूतियों में भी उन्होंने हमेशा प.पू. काकाजी को ही निहारा है। और... अपने ऐसे वर्तन से उनके संबंध वाले सभी मुक्तों के मन में भी उन्होंने सभी स्वरूपों की एक सरीखी महिमा बिठा दी है।**

**प.पू. गुरुजी** तो कई बार कहते भी हैं कि–

***सामने आए मुक्त को 'स्वरूप' मानने की प.पू. पप्पाजी की बात जो हम तोते की तरह रटते रहते हैं, वह तो बहुत दूर की बात रही; समकक्ष ऐसी ईश्वरमूर्ति विभूतियों में तो पहले बिना कोई रिज़र्वेशन्स, तारतम्य व भेदभाव रखते हुए हम दिल की सच्चाई से हमारे 'स्वरूप' को देखें।***

आज सभी को स्पष्ट एहसास होता है कि **प.पू. गुरुजी की कथनी व करनी एक जैसी है... वे जो कहते हैं, वह दिल की सच्चाई से मानते हैं और वैसा ही उनके वर्तन में रहता है।**

'अन्नकूट' के दिन श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज व गुणातीत स्वरूपों को भोग लगवाने के लिए चांदी के थाल बनवाए हुए हैं। यूं तो साल में एक ही बार वो थाल निकालते हैं, पर प.पू. गुरुजी ने एक बार सेवकों को समझाया कि–

*हम जब गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति को यही थाल करते हैं, तो प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई जैसी गुणातीत विभूतियाँ दिल्ली मंदिर में स्वयं प्रत्यक्ष आई हों, तब चांदी के थाल में ही क्यों न भोजन कराएँ?*

दरअसल, **प.पू. गुरुजी का तो स्वभाव है ही और अन्यों से भी उनकी यही अपेक्षा है कि जो हम बोलते हैं, वह दिल की सच्चाई से माना हो और हमारे व्यवहार में भी वही हो! और... तभी हमारा वर्तन दूसरों को टच करेगा; वर्ना भले ही कोई कुछ बोलेगा नहीं, पर वह सिर्फ नौटंकी लगेगी और हम हास्यास्पद बनेंगे!**

---

▲ *इस संदर्भ में गुणातीत ज्योत का एक प्रसंग भी हमें यहाँ बहुत कुछ समझा जाता है।*
*गुणातीत ज्योत में एक बार प.पू. पप्पाजी कई दिन तक कहते रहे कि– 'भावना (वहाँ एक संत बहन हैं) मुझे बहुत प्रिय है और उसी के कारण मैं धरती पर हूँ।' लगातार यह सुन–सुन कर एक संत बहन डॉ. वीणा ने ईर्ष्या की वृत्ति में न फंसते हुए नम्र भाव से प.पू. पप्पाजी को प्रार्थना करी कि– 'पप्पाजी! आप किसी भी कारण धरती पर हैं, यही हमारे लिए बहुत है...'*

यही वजह है कि प.पू. गुरुजी उपदेश से नहीं, बल्कि अपने वर्तन से दूसरों के हृदय को तुरंत स्पर्श कर जाते हैं। यदि अल्प संबंध वाले भक्त ने थोड़ा भी कभी कुछ सत्संग के लिए किया हो, तो वो भी खूब मान कर उसकी उस सेवा को प.पू. गुरुजी कभी भी भूलते नहीं।

२७ सितंबर '०८ की रात को करीब ९:०० बजे सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक **प.भ. महेन्द्र कपूरजी** अक्षरवासी हुए। यह खबर सुनते ही प.पू. गुरुजी ने मुंबई जाने का तुरंत निर्णय ले लिया। अगले ही दिन की टिकट न मिलने के कारण २९ सितंबर '०८ की सुबह १०:०० बजे की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी मुंबई के लिए रवाना हुए और एयरपोर्ट से सीधे उनके बेटे प.भ. रोहनजी से मिलने घर गए व उसी दिन देर रात्रि की फ्लाईट से तो दिल्ली लौट भी आए।

हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी के एक ही बार फोन पर बात करने पर प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती निमित्त प.भ. महेन्द्र कपूरजी प.भ. रोहन के साथ दिल्ली मंदिर भजन गाने आ गए थे। और... तब उन्होंने किसी बड़े गायक की हैसियत से नहीं, बल्कि प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने वॉलिन्टरिली भजन गाया था और हमने देखा है कि बाद में पिता–पुत्र दोनों प.पू. गुरुजी के साथ खूब अपनेपन से जुड़ गए थे।

यूं, प.पू. काकाजी की रीति-नीति को पकड़े रखते हुए प.पू. गुरुजी सिर्फ व्यावहारिक तौर पर किसी से संबंध नहीं रखते, बल्कि भले ही कोई व्यावहारिक काम से उनके संपर्क में आया हो, लेकिन उसके जीव में किस तरह प्रभु–प.पू. काकाजी बैठ जाएं, यही हमेशा उनकी चेष्टा रही है। प.पू. गुरुजी की इसी सच्चाई के कारण जो भी इनके संपर्क में आता है, वो मानो इस दिव्य कुनबे का सदस्य बन ही जाता है।

इसी प्रकार १३ मई '०८ की सायं प.पू. गुरुजी को किसी ने बताया कि **जयपुर** में सीरियल बम ब्लास्ट्स हुए हैं। प.पू. गुरुजी ने तुरंत टी.वी. पर समाचार देखे और... जयपुर में जितने भी उनके कॉन्टेक्ट में आए हुए हैं, जैसे पांडे मूर्ति वाले-जिन्होंने दिल्ली मंदिर की मूर्तियाँ बनाई हैं, सूरज मूर्ति वाले–जिन्होंने प.पू. पप्पाजी की मूर्ति बनाई है, जयपुर में रहते दिल्ली के प.भ. पवन खण्डेलवालजी की ससुराल वाले एवं बहनों की ससुराल वाले, प.भ. कीर्तिभाई जानी के संबंध से प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए हुए हैं–इन एक-एक को याद कर-करके प.पू. गुरुजी ने फोन करवाए और उनके सकुशल होने की जानकारी प्राप्त करी। इसी प्रकार **अमदावाद** में भी जब बम ब्लास्ट्स हुए, तो वहाँ के भी सभी मुक्तों को याद करके उनके बारे जानकारी प्राप्त करी। इससे भी अधिक २६ नवंबर '०८ में **मुंबई** में ताज व ऑबेरॉय होटल एवं नरिमान हाऊस पर हुए आंतक के हमले के समय भी मुंबई के सभी मुक्तों की चिंता करते हुए प.पू. गुरुजी ने फोन करवाए। और... तत्पश्चात् तो उस दिन से रोज महापूजा में प्रार्थना रखने पू. यज्ञप्रियस्वामी को लिख कर दिया कि– *'मौजूदा आंतक के माहौल में प्रगट की निष्ठा वाले आश्रितों की सर्व प्रकार से रक्षा हो...'* **–यह दर्शाता है प.पू. गुरुजी का मुक्तों के प्रति का अपनापन–कुटुंबभाव!**

प.पू. गुरुजी गुणातीत कुनबे के संत हैं, सो अपने आश्रितों की स्थूल रक्षा के लिए जब इतने कन्सर्न्ड रहते हैं, तो जीव की रक्षा हेतु तो वे कितने सावधान होंगे?

**'अक्षरज्योति'** की साधक बहन **पू. गौरी दीदी** को दिसंबर २००७ में कैंसर की तकलीफ हुई। **'कैंसर'** का सुन कर सभी को खूब दुःख हुआ और इसी कारण उनके ऑपरेशन होने से दो दिन पहले सभी हरिभक्तों ने लगातार चार घंटे की धुन करी। **प.पू. गुरुजी ने दिल्ली में कुटुंबभाव से जीता जो समाज खड़ा किया है, उसका ऐसे मौके पर ख्याल**

**आ जाता है कि जैसे अपने परिवार में ही कोई घटना बनी हो, ऐसे सब चिंतित हो गए।** इधर सभी को दुःखी देख कर पू. गौरी दीदी को भी मन में विचार आया करे कि मैं सभी को कैसी परेशानी में डाल रही हूँ वगैरह-वगैरह। और... यूं सोचते-सोचते उनका भीतर रोने लगा कि तभी प.पू. गुरुजी ने उन्हें दिलासा देने को नहीं, बल्कि अंतर का बल प्रदान करने लिख कर दिया कि –

*हमारे पल-पल के कर्ता तो हमारे प्रगट प्रभु- प.पू. काकाजी ही हैं और वे कभी भी हमारा अहित नहीं करेंगे, न होने भी देंगे–यह हमारी 'निष्ठा' है... संत को हमसे जीवलक्षी प्रीति है। सो, हमारी चेतना के विकास–प्रगति के लिए ही उन्होंने हम से यह सुलूक किया होगा...*

प.पू. गुरुजी द्वारा लिखी ये पंक्तियाँ पढ़ कर पू. गौरी दीदी को इतनी निश्चिंतता मिली कि बिना किसी घबराहट या नॅगेटीव विचारों के उन्होंने ऑपरेशन भी करवा लिया और... स्वस्थ होकर भजन–सेवा करती भी हो गईं!

श्रीजी महाराज ने कहा है कि कल्याण के मार्ग में उन्होंने त्यागी व गृहस्थी का कोई फर्क नहीं रखा। **'भक्तों के चैतन्य की रक्षा करना–यह तो प्रभु का स्वभाव ही है।'** अरे! हम अनजाने में भी कोई प्रारब्ध खड़े करते हैं, जिसका हमें ख्याल ही नहीं होता; पर आगे जाकर उसे भुगतना न पड़े, सो उसका प्रायश्चित् तक करवा कर वे हमें उस प्रारब्ध से मुक्त भी करवा देते हैं...

प.भ. नवीनभाई का पोता 'नक्षत्र' एक–सवा वर्ष की आयु का था। एक बार वह कुछ बीमार हुआ था। सो, उसे डॉक्टर के पास ले जाया करते थे। डॉक्टर ने उसे प्यार से एक टॉफी दी, ताकि वो रोए-करे नहीं। बीमार होने के कारण वह खूब चिड़चिड़ा-सा हो गया था, सो उसने टॉफी फेंक दी। डॉक्टर ने उसे खुश करने दोबारा टॉफी दी, पर नक्षत्र ने गुस्से से वो डॉक्टर के मुँह पर ही मारी। डॉक्टर भी हर्ट जैसे हो गए और बोले –'मत लेना, बस!' सहज ही यह बात जब प.पू. गुरुजी को पता चली, तो प.पू. गुरुजी ने प.भ. आशिष को कहा कि –

*'अगली बार जब तुम डॉक्टर के पास जाओ, तो मुझ से एक बढ़िया पेन्ट-शर्ट लेकर जाना और नक्षत्र के हाथों से डॉक्टर को दिलवाना।'*

यूं, फिर जब नक्षत्र को दोबारा डॉक्टर के पास दिखाने ले गए, तब उसके हाथों से डॉक्टर को वह पेन्ट-शर्ट दिलवाए कि ये हमारे गुरुजी ने भेजे हैं। संतों द्वारा भेजा प्रसाद लेकर वो खुश हो गए। परंतु, बाद में प.पू. गुरुजी ने ही कृपा करके इस बात का मर्म बताया –

*'नक्षु ने डॉक्टर के मुँह पर टॉफी जो मारी और डॉक्टर हर्ट हो गए, वह नक्षु ने अनजाने में प्रारब्ध खड़ा कर दिया था। सो, उसके हाथों यह भेंट दिलवा कर डॉक्टर को खुश किया है, ताकि नक्षु को वो प्रारब्ध भुगतना न पड़े!'*

नक्षत्र तो बिल्कुल नासमझ है, लेकिन कैसी खुशनसीबी है कि उसका जन्म ही मानो सत्संग में हुआ और प.पू. गुरुजी के रूप में आत्मा के सच्चे माँ-बाप मिल गए, जो पल-पल उसकी रक्षा में खड़े हैं। हम विचारें कि नक्षत्र को प्रारब्ध का पाश न लगे, उसके लिए प.पू. गुरुजी जब इतना कन्सर्न्ड रहते हैं, तो हम जब वृत्तियों के आवेग में भक्तों के बारे अंटशंट बातें करके जो दुर्व्यवहार करते हैं, उससे उन्हें कितना दुःख पहुँचता होगा?

सच, हमारे भाग्य का पार नहीं कि दिन-रात जो हमारी परवरिश में रत रह कर, न केवल हमारे स्वभावों से हमें मुक्त कर रहे हैं; बल्कि प्रकृति-प्रारब्ध से रक्षा करने वे रक्षक बने हैं– ऐसे संत की गोद हमें मिली है। दूसरी ओर देखें तो इस दिव्य परिवार के हर एक मुक्त को व्यावहारिक ढंग से सुखी करने में भी प.पू. गुरुजी ने कोई कसर नहीं छोड़ी...

मार्च '०४ में दिल्ली से अमदावाद साथ में जा रहे प.भ. पुरी साहेब के बेटे प.भ. आशिष से प.पू. गुरुजी ने एयरपोर्ट पर पूछा – *तू कभी फ्लाईट में गया है?*

प.भ. आशिष ने बताया – *बचपन में गया था।*

तब सहज ही प.पू. गुरुजी बोले – *अब तू फ्लाईट में ही आता-जाता रहेगा।*

और... हम देखते हैं कि उसे नौकरी ही ऐसी ऊँची मिली है और पोस्टिंग भी ऐसी जगह हुई है कि फ्लाईट से ही उसका आना-जाना लगा रहता है।

हालाँकि प.भ. आशिष ने नौकरी के लिए ३-४ जगह एप्लाई किया था। पर, प.पू. गुरुजी ने उसे सरकारी नौकरी करने के लिए ही कहा। इससे भी अधिक, प.भ. आशिष के लिए जब इन्टरव्यू का लॅटर आया, तो प.पू. गुरुजी ने कह भी दिया– *'मिठाई मंगवा।'*

और... मिठाई मंगवा कर उसका प्रसाद भी बांटा! प.भ. आशिष को तो मन में ऐसा था कि– *अभी तो सिर्फ लॅटर आया है; पास होंगे या नहीं, पता नहीं।* पर, वह इन्टरव्यू में पास भी हो गया और नौकरी भी लग गई! फिर जब प्रोमोशन के लिए इन्टरव्यू देकर आया था, तब भी प.पू. गुरुजी ने आते ही पूछा– *'पोस्टिंग कहाँ होगी?'*

प.भ. आशिष ने कहा– *'मैं एक-दो प्रश्नों में अटक गया था, तो प्रोमोशन होगी कि नहीं, उसका संदेह है।'* फिर भी प.पू. गुरुजी उसी बात को जारी रखते हुए बस यही पूछते रहे कि– *'अब तनखाह कितनी बढ़ जाएगी?'* वगैरह-वगैरह...

यूं, ऊपर से देखने में भले ही प.पू. गुरुजी इन सब बातों में खूब रसबस दिखाई देते हैं, लेकिन भीतर से उनकी वृत्ति निरंतर प.पू. काकाजी से ही जुड़ी रहती है।

और...प.पू. गुरुजी को भिन्न-भिन्न पहलुओं से देखें, तो उनमें प्र.११ की १२वीं **स्वामी की बात** हूबहू तादृश होगी कि– *सर्वदेशीय साधु मिलना बहुत कठिन है। व्यवहार का ज्ञान, भगवान के मार्ग का ज्ञान, सांख्य का, योग का, भगवान की उपासना वगैरह सभी प्रकार का ज्ञान जिसे हो, वह सर्वदेशीय कहा जाए और सत्संग में सर्वदेशीय पुरुष से ही मेल बैठता है – विकास होता है।*

इसी प्रकार–

* स्थूल व्यवहार की बातों के प्रॅक्टीकल समाधान देना,
* आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के आसान उपाय बताना,
* सत्संग की बातें दिमाग में लॉजीकली बिठा देना और फिर–
* भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरि सत्ता का स्वीकार,
* उनके प्रगट स्वरूप के प्रति दृढ़ निष्ठा
  व
* उनके वचन में पक्का विश्वास
  एवं
* हर प्रसंग पर भजन का ही उपाय–

यह सब प.पू. गुरुजी सैकण्ड-सैकण्ड जीकर बता रहे हैं।

और... उनकी ऐसी जीवनशैली से न केवल वयस्क प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, बल्कि सत्संगियों के छोटे-छोटे बच्चों में भी इन संस्कारों का सिंचन हो रहा है, जिसके लिए प.पू. गुरुजी अपनी आयु व देह की परवाह तक नहीं करते!

**प.भ. सुनील खुल्लरजी** को पंचकुला में मकान लेना था। उन्होंने प.पू. गुरुजी से पूछा, तो प.पू. गुरुजी खुद एक दिन के लिए मकान देखने दिल्ली से पंचकुला गए। वहाँ पंजाब यूनीवर्सीटी के डायरॅक्टर श्री श्यामलाल शर्माजी (डिपार्टमेन्ट ऑफ साइकॉलॉजी) प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आए थे। उन्होंने प.पू. गुरुजी से पूछा –

*आपके इस इन्सटीट्यूशन का उद्देश्य क्या है?*

प.पू. गुरुजी एकदम बोले– *'टु क्रीएट हॅपी फॅमिलीज़।'* फिर प.पू. गुरुजी ने उन्हें समझाते हुए कहा– *'देखो, ये सुनीलजी ने मुझे मकान के बारे पूछा। मैं चाहता तो फोन पर भी कह सकता था कि 'ले लो'। और... भले ही मुझे थोड़ा परिश्रम पड़े, पर हमारे यूं आने से उनके बच्चों को ऐसा जरुर होगा कि हमारे पापा तो हर काम गुरुजी को यूं पूछ कर ही करते हैं; सो उनके अंदर भी वो संस्कार पड़ेंगे और फिर वे कभी कोई गलत काम नहीं कर सकेंगे।'*

सच, आज के युग में यदि बच्चों को भी ऐसा हो जाएगा कि कुछ भी काम करो, तो पहले गुरु या बड़ों से पूछ कर करो, तब माँ–बाप को भी कैसी निश्चिंतता हो जाएगी? और... प.पू. गुरुजी के साथ के संबंध और उनके प्रति लगाव से अब ऐसे सत्संगियों के बच्चों में वह दिखता भी है!

यू.पी. के **'इटेड़ा'** गाँव के हरिभक्तों के आग्रह पर प.पू. गुरुजी वर्ष में एक बार वहाँ जाते हैं। सो, अब की बार २६ जनवरी '०९ की सुबह प.पू. गुरुजी करीब सवा सौ मुक्तों को साथ में लेकर वहाँ गए। ढोल बजाते हुए वहाँ के **प.भ. श्यामलालजी** और अन्य हरिभक्तों ने सभी का स्वागत किया और प.पू. गुरुजी के साथ गए हरिभक्तों ने भी बजते हुए ढोल पर खुशी से भंगड़ा किया। इटेड़ा के प्रेमी हरिभक्तों ने प्रसाद की बहुत अच्छी व्यवस्था करी थी। पर, जैसे कि प.पू. गुरुजी भोजन में चावल लेते ही हैं, सो प.पू. गुरुजी ने चावल के बारे पूछा। परंतु, यू.पी. का व्यंजन होने के कारण वहाँ चावल नहीं बने थे। तभी वहाँ उपस्थित **प.भ. सुशील भास्करजी** के १२ साल के छोटे बेटे **वरूण** ने इस बात पर खूब गौर किया। और... जब प.भ. सुशील भास्करजी ने अपनी नई फॅक्टरी का प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों उद्घाटन करवाने दिनाँक पक्का करा और उसका मेनू बना रहे थे, तब वहाँ बैठा वरूण उन्हें लगातार यही कहता रहा कि– *'पापा, बाकी सब भले पक्का करना, पर चावल जरुर याद रखना।'*

इस बात से ही ख्याल पड़ता है कि इस छोटे से बच्चे के जीव में प.पू. गुरुजी कैसे बसे होंगे कि उसने प.पू. गुरुजी की पसंद को इतनी हद तक समझा।

पर, यह भी सच है कि पूर्व के मुक्त के अलावा इतनी छोटी–सी आयु में ऐसी बात और कोई गौर भी नहीं कर सकता। वरूण के माता-पिता बताते हैं कि वरुण जब छोटा था, तो वह अपनी मम्मी सौ. मीरां भाभी को कहता था– *'आप जो मांगोगे वो मिलेगा, पर उसे आप चमत्कार नहीं मानना; काकाजी व गुरुजी को बस थेंक यू-थेंक यू कहना।'* और... अब जब उनकी फॅक्टरी का उद्घाटन हुआ तो सहज ही सौ. मीरां भाभी को वरूण के शब्द याद आ गए और हर्षाश्रु से धन्यवाद करते हुए बोलीं कि–*हम कहाँ थे और काकाजी व गुरुजी ने कहाँ पहुँचा दिया!*
ऐसी बातों से ख्याल पड़ता है कि–अहो! प.पू. गुरुजी के संबंध से बच्चे भी प्रभु का बल लेकर जीवन जीने की आदत डालते हो गए!

यूं, प.पू. गुरुजी ने जब बच्चों को केवल प्रभु का आधार लेकर जीने की कला सिखा दी, तो भगवान भजने आए साधक मुक्तों की प्रगति हेतु तो उनका प्रयास कैसा होगा? परंतु, हमारी जीवदशा है कि साधु ने ९९ बार हमारा साथ दिया होगा, पर यदि एक बार कुछ नहीं किया होगा, तो उनका सारा किया-करा हुआ हम भूल जाएंगे और उलाहना देंगे। सो ही, हमेशा सड़ते रहते हैं... दुःखी रहते हैं और साधु जो सुख देना चाहता है, वो ले नहीं पाते।

एक और बात–पानीपत के **प.भ. पुनीतजी** हर शनिवार की सायं दिल्ली मंदिर आते हैं और सायं की सत्संग सभा का लाभ लेकर रात को मंदिर में रुकते हैं। उनकी पत्नी **सौ. अंजलि भाभी** 'अक्षरज्योति' में रुकती हैं। दूसरे दिन रविवार की महापूजा का लाभ लेकर दोपहर के बाद वे पानीपत लौट जाते हैं। एक बार रविवार की सुबह सौ. अंजलि भाभी अक्षरज्योति से मंदिर गईं और जाकर बैठीं ही

थीं कि सेवक से प.पू. गुरुजी ने उन्हें 'टाईम्स ऑफ इंडिया' में से 'क्रॉस वर्ड' क्वीज़ का पेज निकाल कर भिजवाया। प.पू. गुरुजी के इस जेस्चर को देख कर सौ. अंजलि भाभी एकदम आश्चर्य में पड़ गईं; क्योंकि अखबार में आती इस क्वीज़ को वो हमेशा घर पर खूब इन्ट्रेस्ट से भरती हैं। इतने सारे बैठे हरिभक्तों में से उन्हीं को खास यह भिजवाना–उन्हें खूब अचरज में डाल गया। यूं, प.पू. गुरुजी के अंतर्यामी स्वरूप का उन्हें तो दर्शन हुआ, परंतु इस प्रसंग को हम भी गहराई से सोचें कि – जब प.पू. गुरुजी 'क्रॉस वर्ड' क्वीज़ खेलने जैसी बात तक को जान लेते हैं, तो हमारी पल-पल की क्रिया-विचार भी उन तक पहुँचते ही होंगे न?

इसीलिए जीव की आंतरिक प्रगति किस प्रकार हो, उसका समाधान-सूझ वे अंतर्यामी रूप से देते ही हैं... यह सिर्फ कहने की बात नहीं, हक़ीक़त में कईयों को ऐसे अनुभव भी हुए हैं। कोई मुक्त विचार करके आया हो कि मुझे प.पू. गुरुजी को यह बात करनी है, तो सभा में ही उस मुक्त को जवाब मिल जाए, ऐसी बात प.पू. गुरुजी बोल देते हैं या उनकी आज्ञा से सभा में कथावार्ता की कोई किताब पढ़ी जा रही हो, उसमें से ही उसे समाधान-हल मिल जाता है। यहाँ तक कि कई बार प.पू. गुरुजी यकायक किसी को फोन लगवाते हैं, तो वो मुक्त कहता है कि हम अभी आपको याद कर रहे थे या यही बात करने की सोच रहे थे कि अंतर्यामी रूप से आपका ही फोन आ गया! प.पू. गुरुजी ने सांगोपांग प्रभु को धारा है, सो सहज ही जीव की प्रार्थना तुरंत ही उन तक पहुँच जाती है।

तो, प.पू. गुरुजी के इस प्राकट्य दिन पर दिल की सच्चाई से प्रार्थना करें कि –

केवल बोलने मात्र के लिए हम उन्हें 'अंतर्यामी' न कहें, बल्कि हमारी पल-पल की क्रिया पर टोकने वाले सर्वज्ञ व सर्वत्र हैं, ऐसा दिल से मानें और मन के चक्कर में न फंस कर उनकी कही छोटी से छोटी आज्ञा भी शिरोधार्य करके, उनकी प्रसन्नता के पात्र बनें और ऐसा बहुमूल्य संबंध हम गवाँए नहीं।

इसलिए, सबसे पहले तो सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में अंतर की यही प्रार्थना कि मन के बवंडर में हमारी निष्ठा जो डगमगा जाती है, वह दृढ़ रहे।

एक बार प.पू. गुरुजी बोले थे कि –

*'नक्षु मेरे सोफे पर बैठे या पलंग पर लेटे या टेबल की दराज इत्यादि खोल कर कोई चीज को हाथ लगाए, तो उसे कोई भी मना नहीं करना। उसे ऐसा लगना चाहिए कि ये सब मेरा अपना है।'*

हम सोचें कि जब दो साल के बच्चे तक के लिए प.पू. गुरुजी की यह भावना है; तो हम जो उनके लिए जीने निकले हैं, उन्हें वे कितना कुछ देना चाहते होंगे... ऐसा साधु 'मोक्ष' का द्वार है, जो प.पू. काकाजी की अनुपम भेंट के रूप में हमारे लिए मौजूद हैं और खूब सस्ते बने हैं!

सस्ते कैसे?

तो –

**प.पू. गुरुजी** अकसर बात करते हैं कि –

*भागवत में कहीं भी सुना नहीं है कि भगवान श्री कृष्ण के सम्मुख हजारों-लाखों भक्त बैठे थे। मूलतः देखें तो उनका बचपन ग्वालों–गोपियों के बीच बीता और बाद में तो पूरा जीवन पाँच पांडवों व द्रौपदी की परवरिश में ही गया!*

हम देखते हैं कि प.पू. काकाजी की बात को पकड़े रखते हुए, आज प.पू. गुरुजी भी कुंभ मेले की भीड़ इकट्ठी न करने की चाह रखते हुए केवल निष्ठा वाले मुक्तों के दिव्य परिवार की ही परवरिश कर रहे हैं। और... यही वजह है कि संबंध वाले हर एक मुक्त को वे चौबीस घंटे आसानी से मिलते-करते हैं!

तो, अब हम खूब जाग्रत बनें और आलस–गफ़लत छोड़ कर समय का मोल समझें... प.पू. गुरुजी ने **आलस** की जो व्याख्या बताई कि–

***आलस यानि – सुस्त रहना या सोए रहना वो नहीं, बल्कि जो करना है वो हम न करें और जो नहीं करना वो हम करते रहें...***

ऐसा आलस छोड़ कर उनकी मर्जी में पल-पल जीते हो जाएं। **उनकी मर्जी** तो, पिछले वर्ष **३० मार्च को** अपने प्राकट्योत्सव में दिए **आशीर्वचन के अंतर्गत प.पू. गुरुजी ने बताई ही थी।** तो आओ, उनके उस मर्म को पढ़ें और अंतर से स्वीकारें...

...पिछले साल आप आए थे... हर एक को पप्पाजी के प्रति जो भावना है, उसका रिगार्ड व्यक्त होता था। आप सबके आने से सच में मुझे पर्सनली खूब मजा आया था। सो, अबकी बार भी मैंने सोचा कि भले मेरा जन्म दिन है, लेकिन अपना परिवार इकट्ठा हो जाता है, वो मजा अलग ही आता है। इसलिए अबकी भी मैंने हर जगह फोन कर करके – आग्रह करके कहा कि – ***'आप सब** जरूर आओ ; **साल में एक बार इस फंक्शन पर तो आओ ही'*** और... आप सब वाकई आए भी!

जैसे सभी ने बताया – **मैं पहले से ताड़देव से जुड़ गया...** मुझ पर योगीजी महाराज की वो खूब कृपा हुई; **ये बापा ने करा दिया!** बाकी, जैसा मेरा नॅचर है, वैसे तो मैं स्थूल नियम-धर्म-मर्यादा की आड़ में सत्संग में प्राकृत बड़प्पन प्राप्त करने, प्रपंच खेलने वालों के साथ ही जुड़ जाता। पर, बापा ने मुझे बचा लिया। पूर्वाश्रम के घर में बापा की पधरामनी कराई थी; साथ में हर्षदभाई थे और काकाजी भी थे। बापा ने भजन गाया; फिर बादाम, पिस्ते, केसर का दूध उन्हें दिया। बापा ने सॉसर से थोड़ा पिया और फिर एकदम मेरी तरफ दिया – 'लो प्रसाद'। मैं हाथ में लूं इतने में हर्षदभाई बोले – 'बापा, ए ब्राह्मण छे'। काकाजी मेरी ओर देख रहे थे। अचानक मेरी नज़र वहां पड़ी; काकाजी ने आँख से इशारा किया – 'पी जा जल्दी से'। तब से मुझे हुआ कि – बापा प्रसाद देते हैं और... ये कहते हैं 'ब्राह्मण है यह'। मैं समझ गया कि क्या कहना चाहते थे वे? तब से... और...आप सभी जानते हैं कि कोई व्यक्ति एक बार मेरे दिल से उतर गई, वो फिर कभी बैठ नहीं सकती। ये इन्सीडन्ट नहीं बना होता, तो मैं काकाजी के साथ ऐसा जुड़ नहीं जाता। मुझे इतना वो हो गया कि ओहो! ये काकाजी ने मुझे बापा का प्रसाद दिला दिया, जबकि वो तो रुकावट पैदा कर रहे थे।

ये तो एक प्रसंग बता दिया, पर ऐसी कई वजह बन गईं, जिससे मुझे ऐसा रहा कि – हमेशा यही जोग मिलता रहे। मुझे खुशी भी हमेशा से यही रही है कि ताड़देव से बापा ने मुझे जोड़ दिया। सो, आप सब जब आते हैं, तो **मुझे यूं लगता है कि मेरा अपना एक परिवार आ गया। मुझे हमेशा वो खुशी रही है। यूं परिवार मेरा एक अलग बन चुका हुआ है।** पिछले साल स्वामिजी को राकेशभाई ने फोन करा था और पूछा था कि – *'स्वामी, आप पधारने वाले हैं न? कार्ड में नाम लिखना है।'* स्वामिजी ने तुरंत जबाब दे दिया – *'एमां पूछवानुं होय? नाम लखी ज नाखवानुं।'* साहेब का भी मैं देखता ही रहता हूँ कि मार्च में तो वे रॅग्युलरली हमेशा आयेंगे ही आएंगे। अक्षरविहारीस्वामिजी भी आ गए! ये भी मैं पक्का समझता हूँ कि **आप सब जो आते हैं, वो काकाजी और पप्पाजी के संबंध से आते हैं और मेरे लिए वो बहुत गौरव का विषय है कि इनके ज़रिये आज मेरा आपके साथ संबंध बना रहा हुआ है।** बाकी मेरे स्वभाव से – प्रकृति से अपना कोई संबंध बना नहीं रह पाता। **काकाजी के साथ का – पप्पाजी के साथ का आप सब का जो संबंध है, उस ज़रिये आज मेरी गरिमा है।**

अब, पहली बात ये कि – हक़ीक़त में तो ऐसे कुटुंबभाव की शुरुआत महाराज ने पहले से कराई है। काकाजी कुटुंबभाव की बात करा करते; तो मैंने एक बार पूछा – 'काकाजी, आप कुटुंबभाव की जो बात करते हो, उसका कोई प्रमाण है कि महाराज की ये मर्जी थी।' तब मुझे अंत्य. प्रकरण का २१वाँ वचनामृत बताया था,

जिसमें महाराज ने कहा है कि – **'ऐसे दृढ़ सत्संगी वैष्णव जो हैं, वे ही हमारे सगे हैं – वही हमारी नात...'** तब मैंने पूछा था – 'महाराज बोल तो गए, लेकिन तब किसी ने यह बात पकड़ी हो, ऐसा कोई प्रमाण है?' तब काकाजी ने बताया था कि – **अपनी जो महापूजा है, वो कुटुंबभाव का एक सिम्बल है।** हमारे मंदिरों में जो महापूजा होती है, वह कुटुंबभाव का सिम्बल है। मैंने पूछा – महापूजा में कुटुंबभाव कहां से आया? तो बोले कि – महापूजा की शुरुआत कैसे हुई? महाराज जब स्वधाम गए, तो विरह के कारण दादाखाचर का उद्वेग शांत ही नहीं होता था और सब सोच में थे कि – क्या करें दादाखाचर के लिए? तब गोपाळानंदस्वामी ने कहा कि हम इस निमित्त महापूजा करें और उसमें से ये महापूजा की शुरूआत हुई! यूं सभी को महाराज के संबंध से दादाखाचर के प्रति कितना अपनापन - कुटुंबभाव होगा कि एक दादाखाचर के लिए महापूजा की शुरूआत हुई! बाद में फिर उस समय कन्टीन्यु नहीं रही, लेकिन महाराज ने अंत समय पर जो कहा था कि – सभी हमेशा एक महीना गुणातीतानंदस्वामी के पास जाना; यूं जब गोपाळानंदस्वामी गए थे तब गुणातीतानंदस्वामी ने फिर से याद कराया कि – स्वामी! सोरठ (सौराष्ट्र) के हरिभक्तों का देशकाल अच्छा रहे, इस हेतु आप महापूजा चालू कराओ। सोरठ के सत्संगियों के प्रति स्वामी का यह कैसा कुटुंबभाव होगा? मैं हमेशा वो 'सिगराम वाली' बात करता हूँ। उसमें भी काकाजी ने मुझे यही समझाया था कि – तू ज़रा सोच कि आचार्य महाराज की जाहोजलाली एवं वैभव की तो कितनी रौनक - शौनक? फिर भी गुणातीत को उन्होंने पूछा कि ऐसे आत्मबुद्धि और प्रीति वाले कितने तैयार करे हैं? उसकी वजह यह थी कि स्वामी के कहने पर सेवकों ने जब दोबारा गाँव में जाकर बताया कि – **'जूनागढ़ के जोगी'** हैं और बैलगाड़े के लिए तो इन्होंने कहा है; तब वे सब बोल पड़े – अरे! ***'हमारे'*** स्वामी हैं – यह अभी तक तुमने कहा नहीं? वे जो यह बोले, वह था – 'अपनापन – कुटुंबभाव'। **संत अच्छे हैं, ये है – वो है – वो तो अपनी कल्चर है; लेकिन *'ये स्वामी हमारे हैं'* – ऐसी जो एक भावना – वो जितनी बढ़े, सत्संगियों के बीच कुटुंबभाव जितना बढ़े, इतना सत्संग बढ़ा कहा जाए।**

आज हम देखते हैं कि **असल में वही सत्संग पक्का रहता है।** काकाजी के टाईम से कुटुंबभाव से जुड़े जितने फेमिलीझ हैं; आज पचास साल होने आए, सत्संग में कई ज्वार - भाटे आए, लेकिन वो सारे के सारे फेमिलीज़ आज भी हमारे साथ अडिग टिके हुए हैं। और... सोचें कि – हमारे सत्संग कराए हुए तो कितने 'आयाराम - गयाराम' हो गए! जबकि लड़ते - झगड़ते, सर फोड़ते, प्रेम करते – सब कुछ करते हुए आज वो सब हमारे साथ अडिग टिके हुए हैं। यह भी बोला जाता है न कि जोगी महाराज के बनाए हुए जो साधु हैं, इनको किसी तरह भी रगड़ो; कोई हर्जा ही नहीं! यह बताता है कि इन्होंने कैसी आत्मबुद्धि - प्रीति से – कुटुंबभाव से सत्संग का विकास किया था। तो, स्वामी! आज आप आशीर्वाद दे जाना कि इसी एक थीम पर हम चलते रहें।

...मैंने बीच में एक और बात भी करी थी कि मंदिर चलता है, फंक्शन्स होते हैं, ऐसे कन्सट्रक्शन्स होते हैं; लेकिन स्वामी **आज तक हमने कोई पर्चियाँ नहीं काटी कि – ये चल रहा है, तो तुम ये पर्चियाँ - ये रसीद बुकें ले जाओ। हमने तो पक्का किया है कि 'कुटुंबभाव का' सत्संग करना है। जैसे घर में, मानो – लड़की की शादी होगी, तो क्या हम पर्चियाँ काटेंगे कि – भाई! हमारी लड़की की शादी है; ये रसीद बुक ले जाओ! यूं पैसा इकट्ठा करके तो शादी नहीं करेंगे। हाँ, अपने हालात कमज़ोर होंगे, तो ऐसे रिश्तेदार आपस में मिल – बैठ कर सॅट कर लेंगे। इसी तरह यहाँ जब भी कोई फंक्शन या ऐसा**

**कोई काम होता है, तो हमने यहाँ रिवाज़ रखा है कि जितने फेमिलीज़ हैं, वो सब मिल के-बैठ के सॅट कर लें और ऐसा भी नहीं कि एक-दूजे की शरमाशर्मी से... इन्डीविज्युअली अपने आप सब कर लेते हैं।** तो, **स्वामी! इसी लाइन पर हम हमेशा चलते रहें,** ऐसे आशीर्वाद खास देना।

दूसरी एक बात करनी है। पता नहीं, क्या है कि यहाँ ज्योतिष-तंत्र वगैरह पर लोगों को खूब श्रद्धा रहती है। 'किसी ने कुछ फेंक दिया है, जादू-टोना करा है'... बेशक मानता हूँ कि ज्योतिष विद्या भी एक सायन्स है। कई बार कई कह देते हैं कि – 'हम ज्योतिष में नहीं मानते हैं' – ये बात गलत है। पर, जैसे काकाजी बताते थे कि **'न्यूटन लॉ'** गलत नहीं है, लेकिन बियॉन्ड ग्रेविटेशन अवकाश में वो काम नहीं करेगा; वहां **'आईन्स्टाईन की थियरी'** काम करेगी। इसी तरह **जहां भगवान और संत का डाईरॅक्ट संबंध है, वहां फिर वो ये ज्योतिष 'नल एन्ड वॉइड' हो जाता है।** ये बात **माँ शारदामणि** ने भी यूं कही है कि –

**इवन धी इन्जंक्शन्स ऑफ धी डॅस्टीनी आर कॅन्सल्ड, इफ वन टेईक्स रॅफ्यूज इन गॉड;*
*डॅस्टीनी बाय हर ओन हॅन्ड्स स्ट्राईक्स ऑफ वॉट एवर शी हॅज़ रिटन फॉर हीम/हर।*

देखो, माता की उपासक माँ शारदामणि ऐसा कह सकती है कि भई, ऐसा प्रबल आसरा मिलने के बाद ज्योतिष विद्या की सारी इफेक्ट नल एन्ड वॉइड हो जाती है! पर, यह एक बात हमारे दिमाग में उतर जानी चाहिए। वर्ना तो, ऐसी प्राप्ति होने के बावजूद भी हमें निर्भयता व निश्चिंतता मिलनी मुश्किल है। तो, हमें ऐसी एक निष्ठा पक्की हो जाए कि हमें भगवान और संत का आसरा है; 'हम पर काल, कर्म, माया की हुकूमत नहीं चल सकती' – ये निष्ठा की समझ हम में पक्की बैठ जाए। स्वामी की बातों में लिखा है कि – **'भगवान के द्वारा ही भगवान का निश्चय होता है।'** आप सभी भगवान रखे हुए पुरुष हैं, सो ऐसे आशीर्वाद दे जाएं; ताकि वहम की ऐसी चिन्ता से – ऐसे डर से हम ऊपर उठ जाएं।

बाकी **जितना सिन्सयरली हमने सत्संग करा होगा, वही हमें काम में आएगा। पूरा एईज बदल गया है अब। बनावट करने जाएंगे, ऊपर-ऊपर से दिखावे का सत्संग करेंगे, तो अब जनरेशन भी ऐसी ईन्टलीजन्ट आ रही है कि हमारा ऐसा दिखावा वे समझ जाएंगे।** सायन्स भी ऐसी डॅवलप हुई है कि हमारी बनावट चलने नहीं देगी। स्वामी, थोड़े टाईम पहले मैंने अखबार में पढ़ा कि **एईटी परसेन्ट ऑफ धी डाइवॉर्सिस आर बिकॉज़ ऑफ मोबाईल फोन्स!** क्योंकि पुरुष कहां भटकते हैं, वह मोबाइल बता देता है – वाईफ को पता लग जाता है कि हसबंड कहां गया है। हसबंड को पता लगता है कि वाईफ कहां गई थी। देखो, बनावट की वो सीक्रेसी अब चल नहीं सकती... मेरा कहना यह है कि जनरेशन भी अब ऐसी आई है, सायन्स की टेक्नोलोजी भी ऐसी एड्वान्स हुई है कि हमारी धोखाधड़ी चलेगी नहीं। तो हम अभी ऐसा सच्चा कुटुंबभाव डॅवलप करें।

सच में, आज आप लोग जो आए हो तो मुझे ऐसी खुशी होती है कि – **शुड आई हग यू इन्डीविड्युअली। तो, बस ये कुटुंबभाव हमारा बना रहे। आप लोगों से मेरी यह फिलिंग – सॅन्टीमेन्ट हमेशा जुड़ी रहे कि मेरे सब आ गए** – इतने आप आशीर्वाद दें – यही प्रार्थना।

***— प.पू. गुरुजी***

*[३० मार्च, '०८, रविवार]*

*ध्वनिमुद्रण पर आधारित*

---

* *यदि कोई प्रभु की सेरेछाया में चला जाता है, तो उसके लिए नियति के विधान तक रद्द हो जाते हैं; उस व्यक्ति के लिए लिखे विधान पर विधात्री स्वयं अपने हाथों से सेरे लगा देती है।*

# मार्च माह – प्रार्थना का संगम...

**७ मार्च – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन !** भले ही दो दशक से भी अधिक समय हो गया, लेकिन कानों में गूँजती प.पू. काकाजी की सिंहगर्जना, उनकी अस्खलित धुन का प्रचंड प्रवाह और उनके द्वारा पल-पल मिल रहा आंतरिक बल यही कहता है कि – वह परम चेतना शाश्वत् है... युगों-युगों तक धरती पर शाश्वत् रहेगी। ऐसे गुणातीत स्वरूप के स्वधामगमन दिन पर, उनके श्रीचरणों में यही प्रार्थना कि – हम सत्संग में निर्दोषबुद्धि, सुहृद्‌भाव, ब्रह्मभाव और दिव्यभाव का **'ज्ञान'** जो अब तक कहते-सुनते रहे हैं, उसे **'सर्वोपरि एक स्वामिनारायण'** की समझ दृढ़ करके **अब वर्तन में लाने का समय** आया है। तो, हे काकाजी ! जैसे आप कहते थे –
*माया से परे के इस गुणातीत ज्ञान को जीवन में लाने चरणों में शीशनामी, दीनता उच्चारिए...* और हमें मिले प्रत्यक्ष स्वरूप के चरणों में अपनी बुद्धि छोड़ कर उन्हें राजी कर लेने **'मुक्तों से स्वरूपलक्षी आत्मीयता'** का एकमात्र उद्यम करें !

७ मार्च के तीन दिन बाद यानि – **१० और ११ मार्च** को है – **होली एवं धुलेन्डी !** भगवान स्वामिनारायण ने पृथ्वी पर पधार कर ***'एकांतिकी भक्ति'*** के लिए त्यागी और गृही का कोई भेद नहीं रखा... जिसका जितना समर्पण, उसे उतना सुख। और... ऐसे समर्पण से सुखी होकर एकांतिक धर्म के धारक व पोषक बने **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** (प्रागजी भक्त) की जयंती मानो भीतर के राग-द्वेष को संपूर्ण जलाने के प्रतीक रूप **'होली'** के दिन और... हम सभी जानते हैं कि 'धुलेन्डी' के दिन **गुणातीत स्वरूप प.पू. साहेबजी** का प्राकट्य दिन है।

**अ.म.मु. भगतजी महाराज** यानि – मौके की सेवा लूटने वाले एवं प्रेमलक्षणा भक्ति का मूर्तस्वरूप ! प्रीति का एक ही लक्षण है कि प्रियतम की मर्जी में सर्वस्व का समर्पण कर देना – याहोम हो जाना। यूं भगतजी महाराज ने पहले तो अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामिजी से और फिर उन्हीं की आज्ञा से **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** के साथ जीव जोड़ दिया... मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के प्रति उन्होंने मन में कभी भी मनुष्यभाव – मायिकभाव आने नहीं दिया। **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का वचन व मर्जी ही 'विधि' और इसके अतिरिक्त बाकी सब का 'निषेध'** – यही थी उनकी साधनाशैली ! आइए, उनकी ऐसी साधनाशैली के प्रेरणादायी निम्न दो प्रसंगों को पढ़ें –

एक बार होली के उत्सव के लिए प्रागजी भक्त जूनागढ़ गए थे। उस उत्सव में आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज पधारने वाले थे। सो, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने सभा मंडप में शोभे ऐसा एक बड़ा चंदोवा तैयार करने उन्हें कहा। इतना बड़ा चंदोवा तैयार करने में करीब रु. हज़ार खर्च होते। फिर भी स्वामिश्री ने तो भगतजी महाराज को बुला कर इतना ही कहा –
*'प्रागजी ! चंदोवा बड़ा बनना है और रुपये तो कोठार में हैं नहीं; तुझे जैसा ठीक पड़े वैसा कर।'*
प्रागजी भक्त को तो स्वामिश्री की आज्ञा में हज़ारों और लाखों रुपये दिखते थे। इसलिए ऐसी कोई भी आज्ञा पालने में वे कभी भी पीछे नहीं हटते थे। वे तो यही मानते थे कि स्वामिश्री की इच्छा है, तो रुपयों की बरसात होगी। सो, उनके पास बातें सुनने जो बैठते थे, उन सभी से ६०० रुपये इकट्ठे करके उन्होंने मोटा कपड़ा खरीदा और छपाई करा कर चंदोवा सिलने की तैयारी करी। **दस दर्जी दो महीने में जो काम करें, वह प्रागजी भक्त ने अकेले हाथ ही केवल ४१ दिनों में पूरा किया !**

स्वयं रोज सुबह तीन बजे उठ कर, नहा-धोकर, नित्यकर्म से फारिग होकर मंगल आरती के दर्शन करने के बाद चंदोवा सिलने वे बैठते, तो सीधे राजभोग आरती के समय उठते। फिर भोजन करके बैठते तो रात को बारह बजे सोते। चंदोवा जब तकरीबन पूरा होने ही आया था कि एक दिन रात को बारह बजे स्वामिश्री भगतजी के पीछे आकर खड़े हो गए। भगतजी तो वेग में 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करते हुए-स्वामी की मूर्ति धारते हुए चंदोवा सिल रहे थे। यूं उन्हें मूर्ति में रह कर सेवा करता देख कर स्वामिश्री मनोमन खूब राजी हुए। सहज ही भगतजी की निगाह जब उन पर गई, तो वे स्तब्ध रह गए और माफी मांगते हुए दंडवत् करने लगे। स्वामिश्री ने दंडवत् करने मना करते हुए कहा–

*'प्रागजी! चंदोवा सिलने में जैसी तान है, वैसी महाराज की मूर्ति में हो–तो कुछ करना बाकी रहता नहीं।'*

भगतजी ने हाथ जोड़ कर कहा–

*'स्वामिश्री! यह तो आपके हाथ में है। आप कृपा करोगे, तो होगा।'*

स्वामिश्री भगतजी की ऐसी अनन्य भक्ति देख कर प्रसन्न हुए और कहा–

*'प्रागजी! मैं तेरे पर बहुत राजी हूँ, सो तू जो माँगे वो दूँगा।'*

जब प्रागजी कुछ बोले नहीं, तो स्वामिश्री ने कहा–

*'प्रागजी! तुझे मन में ऐसा होगा कि यह बावा क्या दे पाएगा? लेकिन यह साधु जो कहता है, वो श्रीजी महाराज करते हैं। तो, जो माँगेगा, वो दूँगा।'*

परंतु भगतजी तो कुछ बोले नहीं; तब स्वामिश्री ने कहा–

*'मैं तुझे कहता हूँ कि तू घर जा और बारह महीने में रुपये ६०,००० कमाएगा; फिर इस साधु का समागम करके आनंद करना।'*

लेकिन, भगतजी तो स्वामिश्री की रुचि, अभिप्राय और सिद्धांत को जानते थे। सो समझ गए कि स्वामी उनकी परीक्षा ले रहे हैं। अतः भगतजी ने हाथ जोड़ कर कहा–

*'महाराज! मैंने तेरह वर्ष गोपाळानंदस्वामी का समागम किया और नौ वर्ष से आपके समागम में रहा हूँ। पर, धन या स्त्री में सुख है, ऐसा तो मैंने आपसे कभी सुना ही नहीं है; बल्कि उससे हज़ारों का बुरा ही हुआ है... सो, यदि आप सच में राजी हुए हैं तो–*

* ***आपका ज्ञान मुझे दो,***
* ***आपका घर दिखाओ कि आप कहाँ के वासी हैं एवं***
* ***मेरे जीव को सत्संगी कर दो, ताकि श्रीजी महाराज एक अणुभर भी दूर न रहें– ये तीन वर दो।'***

यह सुन कर स्वामिश्री तो स्थिर-से हो गए, फिर भी मानवजीवन का अंतिम ध्येय सिद्ध करने तत्पर हुए भगतजी की अंतिम कसौटी करी–

*'मूर्ख! तुझे ज्ञान का क्या काम है? जा, मैं वर देता हूँ कि तुझे अक्षरधाम में ले जाने मैं आऊँगा। केले के पेड़ पर ही केले आते हैं, कैक्टस पर केले कहाँ से आएंगे? अंतिम स्थिति का सर्वोच्च ज्ञान तो यदि कोई ब्रह्मचारी, साधु या ब्राह्मण हो, उसे दिया जाए और उसे जीतेजी सिद्ध दशा प्राप्त हुई हो, तो लाखों को उसका लाभ मिल सकता है, तुझे उसका क्या काम?'*

परंतु, स्वामिश्री के सुख के परिमाण से परिचित भगतजी तो टस से मस न हुए और अपने तीन वरदानों को माँगते हुए यही बोले–

*'पृथ्वी का राज्य, इंद्र का स्थान, ब्रह्मा या प्रकृति-पुरुष तक का राज्य मुझे नहीं चाहिए... मुझे तो आपके चरणों की सेवा में अखंड रहना है।'*

यह सुन कर स्वामिश्री बहुत ही राजी होकर हँसे और कहा–

*'यदि तू मरजीवा होगा; तो ही यह ज्ञान तुझे मिले ऐसा है और... वह प्रसन्नता कुछ और ही होती है। वह ज्ञान लेना हो, तो मैं कहूँ वैसा कर। घर छोड़ कर हमेशा यहाँ रहेगा, तो ही वह होगा। इससे भी*

*अधिक–निवृत्ति धर्म, वैराग्य और आत्मनिष्ठा के बिना कभी भी सिद्ध दशा आती नहीं। सो यदि यहाँ रहेगा तो ये तीन बातें तुझे सिद्ध करवाऊँगा।'*
यह वचन दिया।

अहोहो, मर्जी में वर्त कर भगतजी ने न केवल अद्‌भुत आशीर्वाद प्राप्त कर लिए, बल्कि साधकों के लिए तो युगों-युगों तक सत्पुरुष को राजी करने की करामात बता दी।

इसी प्रकार, एक बार हवेली की चिनाई के काम के लिए आए पत्थरों पर एक कुत्ता मरा पड़ा था। उसे उठाने के लिए कोई तैयार नहीं था और... पत्थरों पर कुत्ता पड़ा होने के कारण कोई पत्थर उठा कर नहीं ला रहा था। सो, सब मज़दूर खाली खड़े थे और हवेली की चिनाई का काम भी रूक गया।

स्वामिश्री को इस बात का पता चला। उनकी दृष्टि में तो भगतजी के सिवा इस काम को करने वाला अन्य कोई था ही नहीं! भगतजी चूना पीसने की सेवा कर रहे थे... वहाँ से उन्हें बुलवा कर स्वामिश्री ने कहा–

*'प्रागजी! देखो न पत्थर क्यों नहीं आ रहे?'*

भगतजी तुरंत हाथ-पैर धोकर वहाँ गए, तो पत्थर के ढेर पर मरा हुआ कुत्ता देखा। सभी एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे। स्वामिश्री ने यदि अन्य किसी भगत को देखने भेजा होता, तो वह लौट कर स्वामिश्री को यही कहता–

*'पत्थरों के ढेर पर मरा हुआ कुत्ता पड़ा है। जब जमादार आकर कुत्ते को ले जाएगा, तभी पत्थर आएंगे।'*

परंतु, भगतजी की तो बात ही अलग थी। वे तो जानते थे कि–स्वामिश्री तो सर्वज्ञ हैं, सब कुछ जानते हैं; फिर भी मुझे ही बुला कर देखने को कहा है, सो स्वामिश्री की मर्जी है कि मैं यह कुत्ता हटा दूं, ताकि पत्थर जल्दी आने लगें और मज़दूरों की दिहाड़ी खाली नहीं जाए। अतः खुद तुरंत ही कपड़े बदल कर कुत्ते को घसीट कर बाहर फेंक आए और फिर स्नान कर लिया। पत्थर अंदर आने लगे और भगतजी तो वापिस आकर चूना पीसने की सेवा में लग गए।

भगतजी के ऐसा करने पर चोंचले व स्याने बनते कइयों ने स्वामिश्री को आकर कहा–

*'यह प्रागजी तो गोबरगणेश लगता है, उसने मरा हुआ कुत्ता उठाया!'*

स्वामिश्री यह शिकायत सुन कर मंद-मंद मुस्कुराते रहे, पर कुछ बोले नहीं।

इस तरह, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी जिस पर संपूर्ण शासन कर सकें, ऐसे एक निर्विचार, सरल और सहृद्यी सेवक की भांति भगतजी ने जीवन जिया।

उन्होंने स्वामिश्री को तत्त्व से पहचाना था, तभी सत्संग में अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना की नींव डालते हुए–

*'ये स्वामी जो बैठे हैं, वे अक्षर हैं; जो चलते हैं, वो अक्षर हैं; जो बोलते हैं, वो अक्षर हैं...'*

यूं, सभी को स्वामिश्री के स्वरूप की पहचान करवाई। उसमें विरोध करने वाले के प्रति भी उन्होंने कोई रंज नहीं रखा और अपनी बात दृढ़ता से सत्संग में न केवल रखी, बल्कि अपने समागम से कई त्यागियों और गृहस्थों को 'एकांतिक धर्म' सिद्ध करवाया।

श्रीजी महाराज की प्रगट मूर्ति में अखंड निमग्नता, अपार सेवाभाव जैसे अनेक गुणों के कारण ही ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज जहाँ भी जाते, सभी उनमें खिंचे चले जाते। उनके समागम से प्रगट के सुख का अनुभव होता। पू. विज्ञानस्वामी, पू. महापुरुषदासस्वामी तथा ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज जैसों ने तो, स्वयं ज्ञान–वैराग्य के दैवी गुणों से भरे होने के बावजूद, ब्रह्मस्वरूप भगतजी की ऐसी दिव्यता के कारण वर्ण और आश्रम का मान छोड़ कर उनमें गुरुभाव रखा!

प्रगट प्रभु में अखंड वृत्ति रखने वाले, सभी सेवकों के आदर्श ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जयंती पर

यही प्रार्थना कि उनकी जीवनशैली को आत्मसात् करके प्रगट गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता के हम पात्र बनें!

**प.पू. साहेबजी** यानि – ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की नूतन युवाप्रवृत्ति के लिए चुने गए युवा समाज के ज्योतिर्धर रूप-शूरवीर सूत्रधार! **'अनुपम मिशन'** के अधिष्ठाता, कर्मयोगी साधकों, गृहस्थों के प्राणाधार पुरुष प.पू. साहेब भगवाधारी साधु नहीं हैं, लेकिन साधुता की पराकाष्ठा पर पहुँचे 'साहेब' का अंतर भगवा है। १४ मई १९६६ की तड़के ही **गुरुवर्य योगीजी महाराज** ने प.पू. साहेब को आशीर्वाद देते हुए कहा था–

***मैं तुम्हें और तुम्हारे साथियों को भगवे कपड़े की दीक्षा नहीं दे रहा, लेकिन संसार में नहीं जाना; प्रभु का कार्य करना और इन्हीं कपड़ों में तुम्हें साधुता प्राप्त होगी।***

यूं, गुरुवर्य योगीजी महाराज ने नूतन युग के नूतन ऋषि स्वरूप में प.पू. साहेब की अनमोल भेंट हमें दे दी।

गुरुवर्य योगीजी महाराज की छोटी-बड़ी सभी आज्ञा शिरोधार्य करके प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. बा की निश्रा में माहात्म्य और सरलता से वे ऐसे जिए कि उनके अंतर की प्रसन्नता पाकर स्वयं आज प्रभु के अखंड रहने का धाम बन गए! तभी उनकी ओर सहज ही आकर्षण होता है और उनका पारदर्शक जीवन सभी को खूब स्पर्श कर जाता है... वे ऐसे निर्मल और निर्दोष हैं कि सभी को उनसे सहज ही लगाव हो जाता है, उन्हें कराना नहीं पड़ता। वे सच्चे अर्थ में प्रभु के बने हैं, इसीलिए हर एक को अपने लगते हैं।

आज अपने वर्तन से वे प्रभु का संदेश व्यापक कर रहे हैं। तभी उनके मुखारविंद की प्रफुल्लितता और अद्भुत जोश से जड़ भी चेतन हो जाते हैं। उनकी माहात्म्यभरी वाणी से नास्तिक भी आस्तिक बन कर वंदन कर रहे हैं।

*करोड़ों साधन करके भी निष्काम धर्म शक्य ही नहीं है, पर सत्पुरुष की कृपा और आशीर्वाद से निष्काम धर्म बख़्शिश में मिलता है...* ऐसे निष्कामी हुए प.पू. साहेब के संबंध से आज अनेक निष्कामी बन रहे हैं; अंतर बल से भर जाता है और... जीव प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर चलने लगता है।

आज के युग की चमक–दमक से जहाँ युवा समाज निरंतर पतन की ओर जा रहा है, ऐसे विषम युग के माहौल में उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति – उद्यम यही है कि देश-विदेश में संबंध में आए सभी, कलियुग के कीचड़ से अलिप्त रह कर एक दिव्य जीवन जीने की राह पर निरंतर अग्रसर बने रहें... इसी हेतु योग्य शिक्षा के स्कूल-कॉलेज और कम्प्यूटर शिक्षा के केन्द्रों की स्थापना करी है, ताकि युवा वर्ग में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों के बीज डलते जाएं...

प.पू. साहेब स्वयं आज गुणातीत स्वरूप होते हुए भी प्रगट स्वरूपों के सेवक, संतों के सखा, गृहस्थों-युवकों के दिलों की धड़कन–प्राण रूप हैं। **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी** द्वारा १९९५ में प.पू. साहेब के प्रागट्योत्सव निमित्त दिए आशीर्वाद प.पू. साहेब की महिमा का अद्भुत परिचय दे रहे हैं–

***'साहेब पारस से पारस बने हैं। उनका चितंन, स्मृति करोगे तो जगत तुम्हें छू ही नहीं पाएगा, ऐसे बनोगे...'***

सच, गुरुहरि योगीजी महाराज की गुणातीत समाज पर खूब कृपा है कि ऐसे गुणातीत स्वरूप की भेंट देकर हमें आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखा है। पिछले कई दिनों से प.पू. साहेब **'संवादिता'** यानि–प्रभु व संत को जीवन के केन्द्र में रख कर आपस-आपस में प्रेम-भावना से, एक-दूसरे का सहज स्वीकार करने पर खूब जोर दे रहे हैं। साथ ही साथ **'संबंधयोग'** यानि–संबंध की दृष्टि से जीवन जिएं, ताकि किसी के अभाव-अवगुण में टिके नहीं

रहें – ऐसी उनकी हम से अपेक्षा है। तो, इस **धुलेन्डी – प.पू. साहेब के ७०वें प्रागट्य पर्व** पर यही प्रार्थना कि – आपने जो संकल्प किया है, वह तो अवश्य साकार होगा ही, पर हम कोरे न रह जाएं, बल्कि निमित्त बनें और आपकी प्रसन्नता पा लें...

✡✡✡

## रामनौमी शुभ दिवस वर्ष था सत्रह सौ इक्यासी, रात के दस बजते ही घर-आँगन की मिटी उदासी...

वर्षों के बाद, **भगवान स्वामिनारायण के प्रागट्य का दिनाँक व तिथि** जो १७८१ में यानि – प्रागट्य वर्ष में थे, वे ही अबकी बार साथ-साथ आए हैं। अर्थात् – **१७८१ की भांति ३ अप्रैल को ही रामनौमी का शुभ दिन आया है।**

धरती पर कई अवतार पुरुष और संत आए, लेकिन एक अक्षुण्ण परंपरा से मानव रूप में अखंड प्रगट रहने का सर्व श्रेष्ठ वरदान देने वाले तो एक भगवान स्वामिनारायण हुए और तभी तो वे अवतारों के अवतारी हैं और... **यही है उनकी 'सुप्रीमसी' और बेमिसाल विशिष्टता !** तो आओ, इनके निम्न प्रसंग को निहार कर स्वयं भीतर में महसूस करें कि – हाँ, हमें भी आज भगवान स्वामिनारायण जिस प्रगट स्वरूप के द्वारा प्राप्त हुए हैं, वे सभी प्रकार से हमारी परवरिश - रक्षा करने हेतु हर क्षण हमारे संग अखंड हैं...

श्रीजी महाराज के बालचरित्र में हमने पढ़ा है कि – बाल घनश्याम प्रभु ने बाल्यावस्था से ही घर-परिवार के प्रति अनासक्त भाव ग्रहण किया था और... पिता के अवसान पश्चात् उन्हें अकसर उदास देखते हुए, घनश्याम के प्रति वात्सल्य प्रेम से ओत-प्रोत **सुवासिनी भाभी** ने एक दिन प्रभु को कहा भी –

*'हे घनश्याम, आप हमेशा उदास से रहते हो, हमें यूं बीच मझधार में छोड़ कर तो नहीं चले जाओगे न?'*

बाल प्रभु घनश्याम ने हँसते-हँसते भाभी को जवाब दिया था –

***'भाभी, जिन-जिनसे मेरा संबंध हुआ है, उन्हें मैं कभी भी बीच मझधार में छोड़ूँगा नहीं। मैं डुबाने नहीं, तारने आया हूँ।'***

भोली भाभी तब प्रभु के वचन का मर्म समझ नहीं सकी। लेकिन, इतिहास साक्षी है कि आगे जाकर श्रीजी महाराज के रूप में भक्तराज दादा खाचर के दरबार में रहते हुए उन्होंने संदेशा भेज कर पूरे 'धर्मकुल' को अपने पास बुला लिया था और उन्हें 'सेवा' सौंप कर धन्य किया! अपने आश्रित जीव की रक्षा में वे कैसे तत्पर रहते हैं, वह भी निम्न प्रसंग से निहारें –

सौराष्ट्र में 'मेमका' नामक गाँव है। वहाँ के **मूलजी सेठ** ने महाराज को अपना हाथ सौंप कर स्वामिनारायण धर्म स्वीकारा, तब सारे गाँव ने उनका विरोध किया था। गाँव वालों ने सामाजिक रूप से सेठ का बहिष्कार किया था। दूसरी ओर - सेठ के आर्थिक हालात भी लुढ़क रहे थे। पर, सेठ ने महाराज के सिवा अन्य कोई आधार नहीं रखा था और दिलेरी से अपने मन और प्राण महाराज को सौंपे थे; सो उनके ही भरोसे निश्चिंत रह कर वे भजन - भक्ति किया करते थे। **जो भजन करता है, उसके बेली भगवान रहते हैं और यदि दिल की सच्चाई से कोई भक्त उन्हें याद करे, तो प्रभु तुरंत पहुँच ही जाते हैं।** एक बार सेठ की विनती से महाराज ने 'मेमका' गाँव जाने का कार्यक्रम बनाया। साथी सेवकों ने तब कहा –

*महाराज! सारे मेमका गाँव में सिर्फ एक सेठ और दो-तीन जनों के सिवा कोई सत्संगी नहीं है, और... सेठ तो यहाँ आते ही रहते हैं। तो, आप खामखाह यूं भागदौड़ न कीजिए।*

पर, हम भूल जाते हैं कि हर एक भक्त का भगवान से अपना अलग संबंध होता है...

उस संबंध के वश श्रीजी महाराज संतों – हरिभक्तों के साथ 'मेमका' गाँव में सेठ के यहाँ गए ही और मूलजी सेठ के घर एक दिन नहीं, तीन दिन रहे भी! सेठ ने भी दो-तीन साथियों का साथ लेकर खूब खुशी से महाराज और संघ की बहुत सेवा कर ली। लेकिन, इन चार के सिवा गाँव का एक भी व्यक्ति महाराज के दर्शन के लिए वहाँ फटका नहीं! महाराज ने जब विदाई ली, तब सेठ और उनके साथीदार गाँव के बाहर तक विदा करने आए।

जाते-जाते महाराज ने सेठ को कहा–

*'मेरी एक आज्ञा मानो, तो कहूँ।'*

साथीदारों के साथ सिर झुका कर सेठ ने कहा–

*'महाराज, आप का वचन सिर-आँखों पर; आप जैसा कहोगे, वैसा करेंगे।'*

तब महाराज बोले–

*'तो, बीस दिन में 'मेमका' गाँव छोड़ कर कहीं और चले जाना।'*

चारों के पास कुछ जमीन-जायदाद थी। पर, बीस दिन में तो कौन खेत या घर इत्यादि का ज्यादा दाम देता? फिर भी, मिट्टी के भाव में चारों ने देखते ही देखते सारी मिलकत बेच दी! गाँव वालों ने मज़ाक भी उड़ाया–

*'देखा न तारणहार (प्रभु) को? हमने तो कितना कहा था कि सिर मुंडे के पास मत जाना। लो, सिर मुंडे ने इन्हें भी मूंड डाले!'*

सेठ ने चुप्पी साधते हुए साथीदारों के साथ गाँव छोड़ दिया।

इधर इन्होंने गाँव छोड़ा और उधर गायकवाड़ के लश्कर ने वढवाण के राज्य पर आक्रमण किया। लश्कर ने जब 'मेमका' गाँव में आकर पड़ाव डाला, तब पता चला कि 'मेमका' गाँव वढवाण के ताबे का है। फिर तो लश्कर ने सारे गाँव पर धावा बोल दिया। सब लुट गए और... किसी के पास कुछ नहीं रहा। सिर्फ मूलजी सेठ और उनके साथी बच गए थे और तब मेमकावासियों को ख्याल पड़ा कि–

**'महाराज ने सेठ और उसके साथियों को डुबाया नहीं, बल्कि सच में तारा है।'**

सच, जो महाराज के होकर रहते हैं, उनके तो वे तारणहार बने हैं। और... केवल व्यवहार के तारणहार नहीं, वरन् इस भवसागर से भी तारने वाले वे हैं। ऐसे कृपासाध्य प्रभु को यदि दिल की सच्चाई से कोई प्रार्थना करे– *'आप मेरे हो और मैं आपका हूँ...'* तो, शिष्य के मात्र इतना ही कहने पर वे अत्यधिक प्रसन्न हो जाते हैं।

महाराज के समय में **भक्तराज झीणाभाई** जब अंतिम सांसें ले रहे थे, तब खबर मिलते ही महाराज 'पंचाला' गाँव पहुँचे थे। वहाँ महाराज ने झीणाभाई को पूछा– *'पुत्र **हठीसिंह** के बारे कुछ कहना है?*

झीणाभाई ने हाथ जोड़ कर कहा–

*'महाराज! हठी यदि आपका भक्त बन कर रहेगा, तो मेरी सिफारिश के बिना भी आप उसका ध्यान रखोगे। यदि वह भक्त बन कर नहीं रहेगा, तो मैं आपको लाख कहूँगा, फिर भी आप उसका ध्यान रखने वाले नहीं हो।'*

महाराज झीणाभाई की ऐसी समझदारी देख कर अत्यंत प्रसन्न हुए थे।

तो, रामनौमी पर महाराज का प्रागट्योत्सव मनाते हुए अंतर में हम यही एक विश्वास रखें–

**तारणहार प्रभु जब भक्तों को तारने के लिए धरती पर प्रगट हैं, तो वे हमें संसार और जगत में डूबने नहीं देंगे, उबार ही लेंगे – यदि मन, कर्म, वचन से हम उनके होकर रहेंगे!** क्योंकि – प्रभु को भी एक कायदा है–

***'जो उनका भरोसा करता है, उसका भरोसा प्रभु कभी तोड़ नहीं सकते!'***

✡✡✡

## Statement about ownership and other particulars about newspaper — 'भगवत् कृपा' ( Form IV Rule 8 )

| | | |
|---|---|---|
| 1. Place of Publication | : | Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52 |
| 2. Periodicity of its Publication | : | Bi-Monthly |
| 3. Printer's Name | : | Prabhaker Rao |
| 4. Nationality | : | Indian |
| Address | : | 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52 |
| 5. Publisher's Name | : | |
| Nationality | : | As above |
| Address | : | |
| 6. Editor's Name | : | |
| Nationality | : | As above |
| Address | : | |
| 7. Owner's Name | : | Yogi Divine Society |
| Nationality | : | Indian |
| Address | : | 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52 |

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 5 March, 2009

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (1) | दि. | 7.3.'09, | शनिवार | — | ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन<br>एकादशी – व्रत |
| (2) | दि. | 10.3.'09, | मंगलवार | — | होली, होलिका दहन |
| (3) | दि. | 11.3.'09, | बुधवार | — | धुलेन्डी, *दिल्ली मंदिर में चंदनोत्सव सुबह 8:30 बजे से...*<br>ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव<br>प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्रागट्य तिथि |
| (4) | दि. | 13.3.'09, | शुक्रवार | — | **प.पू. गुरुजी का 72 वां प्रागट्य दिन**<br>*(28-29 मार्च, शनि-रविवार की सायं ताड़देव – दिल्ली में मनाया जाएगा।)* |
| (5) | दि. | 22.3.'09, | रविवार | — | एकादशी, व्रत |
| (6) | दि. | 27.3.'09, | शुक्रवार | — | गुडी पड़वा |
| (7) | दि. | 29.3.'09, | रविवार | — | ***प.पू. गुरुजी का 72वाँ प्रागट्योत्सव दिल्ली में – सायं 5:00 बजे से...*** |
| (8) | दि. | 3.4.'09, | शुक्रवार | — | रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत |
| (9) | दि. | 5.4.'09, | रविवार | — | एकादशी, व्रत |
| (10) | दि. | 7.4.'09, | मंगलवार | — | गुरुहरि योगीजी महाराज का दीक्षा दिन |
| (11) | दि. | 9.4.'09, | गुरुवार | — | श्री हनुमान जयंती |
| (12) | दि. | 21.4.'09, | मंगलवार | — | एकादशी, व्रत |
| (13) | दि. | 27.4.'09, | सोमवार | — | अखात्रीज |
| (14) | दि. | 4.5.'09, | सोमवार | — | **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन** |
| (15) | दि. | 5.5.'09, | मंगलवार | — | एकादशी, व्रत |
| (16) | दि. | 7.5.'09, | गुरुवार | — | नृसिंह जयंती, फलारी व्रत |

**R.N.I. 28971/ 77**
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly
**If undelivered please return to :—** *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
***'Taad-dev'*,** Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
*Printed at :* **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052